ISSN : 2454-308X
Volume : 03
Issue : 05

INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
REFEREED | PEER REVIEWED

July - September 2017

कोरी हांडी : संवेदना और शिल्प

Ashutosh
Research Scholar,
Deptt. of Hindi,
Dakshin Bharat Hindi Parchar Sabha,
Chennai (T.N.)INDIA

ABSTRACT

कोरी हांडी एक झलकी संग्रह है। इसका प्रकाशन वर्ष 2010 में देव प्रकाशन दिल्ली से हुआ है। इसमें कुल सात झलकियॉ संकलित हैं। इनके संदर्भ में लेखक दो शब्द में स्वयं लिखते है। –'' हमें हमारी उन झलकियों का ध्यान आया जो हमने वर्षों पहले आकाशवाणी के लिए लिखी थी। उन्हीं में कुछ नाट्य संकेतों को जोडकर हमने इन्हें कुछ नया रूप दिया। अतः ये झलही 'हरियाणवी स्किट्' भी बन गई है। इन्हें हम हरियाणवी एकांकी भी कह सकते हैं।'' यह शोध पत्र इसी का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

KEYWORDS : शिल्प, एकांकी, ।

कोरी हांडी शिल्प के धरातल पर झलकी हैं, इन्हें मूलतः लेखक ने आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र के लिए लिखा था और ये समय–समय पर आकाशवाणी से प्रसारित भी हुई है। झलकी को स्पष्ट करते हुए इनके लेखक ने लिखा हैं–'' मूलतः झलकी रेडियों की अपनी विद्या है। आकाशवाणी की यह एक ऐसी विद्या है जो श्रव्य है, जिसमें किसी सामाजिक बुराई को केन्द्र में रख कर कथ्य का ताना बाना बुना जाता है। इसी में पात्रों के माध्यम से उस रूढि की कलई उतारी जाती है। पात्र स्वयं ही उस रूढि को तोढ देते है। केवल समस्या का चित्रण मात्र करना झलकी का मर्म नही है। अपितु इसके माध्यम से किसी कुरीति,रूढ़ि, भ्रम, अंधविश्वास आदि की झलक मात्र देकर उसे तिरोहित करना, उसे नष्ट करना, उसे समाज से उखाड़ना की इसका एक मात्र धेय हैं।(2)

अतः इस आधार पर झलकी 'हरियाणवी स्किट', हरियाणवी एकांकी, रूपक आदि से भिन्न एक नाट्य विद्या है, किन्तु केवल श्रव्य है। जबकि रूपक, नाटक, एकांकी, हरियाणवी स्किट आदि विद्याऍ दृश्य–श्रव्य हैं। लेखक ने लिखा है–''लेकिन झलकी मात्र श्रव्य विद्या हैं। यह प्रसारित होती हैं प्रदर्शित नहीं, इसीलिए पात्र के हाव–भाव एवं शारीरिक चेष्टओं से जिन संकेतों की अभिव्यक्ति होती हैं। वह इसमें आमतौर पर नहीं होती। परन्तु संवाद का गठन इस कदर करना जरूरी है कि जब पात्र उस संवाद को आकाशवाणी के लिए बोलें तो संवाद से ही पात्र के शारीरिक और मानसिक हाव–भावों के बिम्ब श्रोता अपने मानस पटल पर उभारता चले।'' (3)

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि ''झलकी में संवादों की कसावट, समस्या का उभार और अन्त में उस समस्या से जूझते पात्रों में से ही किसी एक या दो पात्रों के माध्यम से उसका समाधान प्रस्तुत कर देना अपने आप में अनूठा सा प्रयोंग हैं। (4)

झलकी के शिल्प में दूसरा स्थान भाषा का है। इसकी भाषा भी नाटक, रूपक, हरियाणवी स्किट, हरियाणवी एकांकी से भिन्न होती हैं। इसे स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है–''दूसरी बात भाषा को लेकर भी कही जा सकती है। झलकी की भाषा संयत, टकसाली, और फूहड़पन से दूर होती है, तथा साम्प्रदायिकता, जातीयता आदि।

आदि के भावों से परे भी होती है। क्योंकि इसका प्रसारण देश और विदेश में एक साथ होता हैं। अतः इसकी भाषा का किसी भी दृष्टि से गलत अर्थ नहीं होना चाहिए। जबकि एकांकी और हरियाणवी स्किट में इसका ध्यान नही रखा जाता हैं। (5)

इन सभी झलकियों में लेखक ने हरियाणवी भाषा का प्रयोग किया हैं। प्रथम झलकी 'दो घूँट' शीर्षक से हैं। इसमें समस्या यह है कि कहीं तो दो घूँट पानी भी पीने को नहीं हैं और कहीं शराब की 'दो घूँट' पीकर लोग झगड़ा कर लेते हैं और बाद में पछताते है। ग्रामीण जीवन की स्पष्ट झलक इस झलकी में झलकती हैं। आपसी रिश्तों का निर्वाह कैसे किया जाये। उन्हें कैसी निभाया जाये। इन सब का कोरा चिठठा पात्रों के माध्यम से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

दूसरी झलकी का शीर्षक 'कोरी हांडी' हैं। इसमें बॉझ औरत को कोरी हांड़ी के प्रतीक द्वारा प्रस्तुत किया गया हैं। समस्या पुत्र होने न होने की तो है ही, परन्तु इसके साथ ही कुपुत्रों को जन्म देने वाली मॉ भी कोरी हांड़ी बन जाती हैं। बुरा पुत्र होने से उसका न होना कहीं ज्यादा अच्छा है।

तीसरी झलकी कसोण है। दुनिया चॉद पर पहुँच रही हैं और हरियाणवी समाज अभी तक सौण–कसौण के चक्कर मे पड़ कर अपने बनते हुए कार्यो को भी बिगाड़ लेता है। इसके माध्यम से लेखक ने करारा व्यग्ंय पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

चौथी झलकी बेड़ा गरक शीर्षक से है। इसमें समस्या यह है कि हरियाणवी समाज में अभी तक लड़का और लड़की में भेद माना जाता है। लड़की का पैदा होना अशुभ तथा लड़के का पैदा होना शुभ हैं। इसीलिए भ्रूण हत्याएँ होती हैं। यदि लिंगानुपात यों ही गिरता रहा। अर्थात पेट मे लड़की है तो गर्भ गिरवा दिया जाय। यह भाव यदि समाज मे रहा तो इस समाज का बेड़ा गरक होना निश्चित है। अतः भ्रूण हत्या की समस्या से जूझती इस एकांकी मे एक ज्वलंत समस्या को उकेरा गया है।

पॉचवी झलकी अनोखा दहेज है। इसमें लड़की को दहेज देने की बजाय उसको पढा–लिखा कर योग्य बनाना ही अनोखा दहेज है। ऐसा दहेज देने पर वधुएँ जलाई नहीं जायेंगी, तलाक नहीं होगा। एक आदर्शवादी सोच को लेखक ने इस झलकी में पिरोने की चेष्टा की है।

छटी झलकी ईब जनता जानैगी। इसमें समाज में चारों तरफ फैल भ्रष्टाचार का संकेत है साथ ही एक छोटे से थाणेदार के माध्यम से सुधार का प्रयास है। यदि सारी जनता जग जाए तो भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो सकता हैं। इसकी पहल थाणे से जो जाए तो भ्रष्टाचार समाप्त होने में देर नहीं लगेगी।

सातंवी एकांकी 'आग्यी नै सूत' है। इसमें बालक के चहुँमुखी विकास की बात कही गई हैं। परिवार के लड़के–लड़की सभी पढ़ाई में, खेल में, अन्य गतिविधियों में भाग लेकर अपना विकास कर सकते हैं। यदि वे सभी क्षेत्रों मे योग्य हैं तो सूत आ ही जाती हैं अर्थात् काम बन ही जाता हैं।

इस प्रकार संवेदना और शिल्प के धरातल पर जब इस झलकी संग्रह की जॉच की जाती हैं तो हमें पता चलता हैं कि लेखक की हरियाणवी समाज की पकड़ बहुत मजबूत हैं। उन्होंने समाज की प्रत्येक समस्या को इन झलकियों के माध्यम से उकेरा है तथा इल झलकियों के पात्रों के माध्यम से उन समस्याओं के समाधान भी देने की चेष्टा की हैं।

आम बोल–चाल की हरियाणवी भाषा के माध्यम से लेखक ने अपनी बात बहुत ही सहज ढंग से कह दी हैं। कहीं–कहीं हरियाणवी भाषा के मुहावरे व लोकोक्तियों के प्रयोग से इन्होंने अपनी भाषा को सुष्ठु भी बना दिया है। यह एक अनूठा झलकी संग्रह है। मंचित होने पर निश्चित ही इन झलकियों ने दर्शकों को भाव–विभोर किया होगा, लेकिन पाठ्य रूप में भी ये गहरी छाप पाठक पद छोड़ती हैं।

REFERENCES :

1. **डॉ0 विश्व बंधु शर्मा : कोरी हॉड़ी (झलकी संग्रह), दो शब्द, पृष्ठ–1**
2. **वही , वही, वही**
3. **वही पृ0 1–2**
4. **वही पृ0 2**
5. **वही पृ0 3**